कम पानी में मसूर की खेती

मसूर ठंडी जलवायु की फसल जो रबी मौसम की चना बाद दूसरी महत्वपूर्ण फसल है जो सामान्यतः असिंचित खेती के लिए उपयुक्त दलहनी फसल है। परंतु उच्चा भाव व अधिक उपज के कारण किसान भाई इसे सिंचित क्षेत्रों में भी बोने लगे हैं।

भूमि व उसकी तैयारी

अधिक उपज के लिये दोमट, तथा कछार भूमि सर्वोत्तम है। पहली गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और बाद 2-3 जुताई हल्की कर पाटा चलाकर समतल, भुरभुरी एवं खरपतवार रहित करना आवश्यक है जिसमें समुचित नमी हो।

बीज दर एवं बुवाई समय

मसूर बड़े दाने वाली किस्म 35 से 40 किलोग्राम और छोटे दाने वाला 30-35 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टर लगता हैं। जिसमें कतार से कतार की दूरी 20-30 सेमी, पौधे से पौधे की दूरी 2-5 सेमी जिसको 4-5 सेमी की गहराई पर बोयें। मसूर बोने का उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर है यदि धान में बुवाई करना हो तो खड़ी फसल में अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में खेत में बीज बिखेर दें। बोनी में देरी होती है तो बीज दर में 5 किलोग्राम वृद्धि कर देना चाहिए।

भूमि उपचार एवं बीजोपचार

भूमि उपचार के लिये अंतिम जुताई के समय खेत में मैलाथियान 5 प्रतिशत पाउडर का 20-25 किलोग्राम मात्रा जमीन में मिला दें। बीज को 2 ग्राम थाईरम अथवा 2 ग्राम बाविस्टीन दवा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें इसके बाद 10 किलोग्राम बीज को 250 ग्राम राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर छाया में सुखाकर बुवाई करें।

फसल चक्र

धान के बाद फसल चक्र में मसूर का उत्पादन उतेरा विधि से भी किया जाता है इससे दलहन की फसल मिलने के साथ-साथ भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ती है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

मसूर की जड़ों में पाये जाने वाली ग्रन्थियों में नत्रजन स्थिरीकरण जीवाणु पाये जाते हैं। जो वायुमंडल की स्वतंत्र नत्रजन अवशोषित कर लेती है जो कि लगभग 85% नत्रजन की मांग को पूरा करती है। फिर भी अच्छी पैदावार के लिये 43 किलोग्राम यूरिया, 250 किलोग्राम फास्फोरस, 33 किलो ग्राम पोटाश और 20 किलोग्राम सल्फर को प्रति हेक्टर देना चाहिये।

सिंचाई

मसूर की खेती असिंचित और बारानी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती है। यदि सर्दियों में एक बार वर्षा हो जाती है तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। सिंचाई की व्यवस्था हो तो हल्की प्रथम सिंचाई बुवाई के 40-45 दिन बाद तथा दूसरी सिंचाई फलियों में दाने भरते समय करना चाहिये।

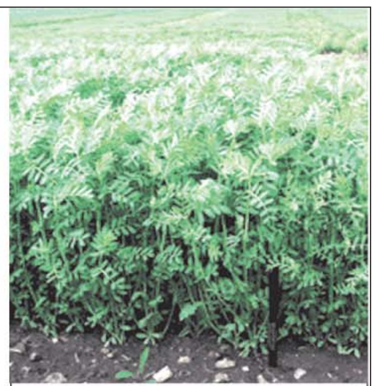

उन्नत किस्म

म.प्र. के लिये के-75 (मल्लिका), नूरी,एल-4076, जे.एल.-1, जे.एल.-3, जवाहर मसूर-2 सर्वोत्तम किस्में है।

के-75 (मल्लिका)

यह किस्म 110-115 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 12-15 क्विन्टल प्रति हेक्टर होती है। यह उकठा निरोधी किस्म है।

जे एल -1-

यह किस्म 100-110 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 10-12 क्विन्टल प्रति हेक्टर होती है। यह बड़े दाने एवं धूसर रंग वाली किस्म है तथा उकठा एवं गेरुआ निरोधी किस्म है।

जवाहर मसूर-2

यह मध्यम अवधि 110-115 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 10-12 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है। यह बड़े दाने वाली किस्म है तथा उकठा एवं गेरुआ निरोधी किस्म है।

कटाई एवं गहाई

फसल पकने पर ज्यादा सूखने से पूर्व कटाई करके साफ खलिहान में सुखाकर गहाई करें। 9-11% आर्द्रता रहने पर सुखाकर भंडारण करें।

अलसी - कुसुम लगायें

कुसुम एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है इसके तेल का उपयोग लाभकारी होता है। जिन क्षेत्रों में इस वर्ष वर्षा कम हुई है तथा भूमि हल्की है वहां पर कुसुम लगाकर अच्छा लाभ कमाया जा सकता है।

कुसुम एक महत्वपुर्ण तिलहान फसल

खेत की तैयारी

वैसे तो कुसुम की खेती हल्की जमीन में की जा सकती है परंतु इसके लिये भारी जमीन अच्छे जल निथार के साथ उपयोगी होती है। खेती की तैयारी अन्य रबी फसलों की तर्ज पर की जाती है।

जातियां

मंजीरा और ए 1 आंध्र प्रदेश के लिये जे.एस.एफ 1, जे.एस.आई 7, जे.एस.आई 73 इत्यादि. मध्यप्रदेश के लिये।

बीज दर

20 किलो/ हेक्टर कतार से कतार 45 से.मी. तथा पौध से पौध 1 से.मी. दूरी/विरलीकरण एक महत्वपूर्ण क्रिया मानी जाती है ताकि सघनता न हो पाये बोनी 5 से.मी. गहराई पर करें बुआई पूर्व बीज को 24 घंटे ठंडे पानी में भिगोकर फिर सुखाकर बीजोपचार 3 ग्राम थाईरम/ किलो बीज से अवश्य ही करें। ताकि अच्छा अंकुरण मिल सके

पोषक तत्व

सिंचित अवस्था में यूरिया 130 से 150 किलो, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 33 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश/हेक्टर की दर से दिया जाये। असिंचित अवस्था में 87 किलो यूरिया, 125 किलो सिंगल सुपर फास्फेट देना चाहिये।

अलसी

अलसी एक तिलहनी फसल है जो देश में करीब 7.88 लाख क्षेत्र में लगाई जाती है।

भूमि तथा तैयारी

इसके लिये भारी मिट्टी उपयोगी होती है। मिट्टी का भुरभुरा होना जरूरी है। इसके लिये एक गहरी जुताई तथा दो बार कल्टीवेटर से तथा पाटा लगाकर खेत बनाया जाना चाहिए ताकि अंकुरण अच्छा हो सके।

बुआई समय

असिंचित अवस्था में इसकी बुआई अक्टूबर में की जाती है सिंचित अवस्था में बुआई 15 नवम्बर तक की जाना चाहिए।

बीज की मात्रा

एक हेक्टर क्षेत्र के लिये 25 से 30 किलो बीज पर्याप्त होगा। उतेरा पद्धति में 35-40 किलो/हेक्टर लगता है। बुआई पूर्व बीज का उपचार 3 ग्राम थाईरम/किलो बीज के हिसाब से करें।

जातियां

जवाहर 17, जवाहर 552, जवाहर 1,जवाहर 7 इसके अलावा जवाहर 556, जवहार 30-5, जवाहर 49-2, जवाहर 30-3 भी अच्छी जातियां है। जवाहर 1 जाति गाल मक्खी के प्रकोप से बचाती हैं जवाहर 23 सफेद फूल वाली जाति हैं जो सभी रोगों के लिये प्रतिरोधी है।

बुआई विधि

नमी की परख करके नारी हल द्वारा 5-7 से.मी. गहराई पर बीज डालें कतार से कतार 20 से 30 से.मी. तथा पौध से पौध 7 से 10 से.मी. होना चाहिए।

जल प्रबंध

वैसे तो अलसी जल भूमि में 175 से.मी. तक गहराई में की जाती है तो सिंचाई के बिना भी उत्पादन मिल जाता है परंतु यदि एक या दो सिंचाई दी जाये तो उत्पादन दोगुना बढ़ जाता है सिंचाई बुआई 30-40 दिनों बाद तथा दूसरी 75-80 दिनों बाद दी जाये तो अच्छा लाभ मिलेगा।

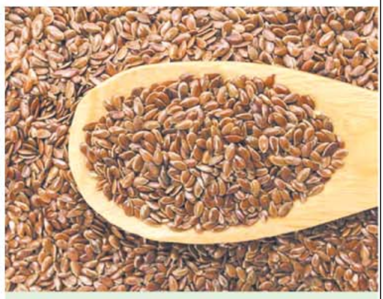

पोषक तत्व

असिंचित क्षेत्रों के लिये यूरिया 87 किलो तथा सिंगल सुपर फास्फेट 94 किलो/हेक्टर की दर से डाले तथा सिंचित क्षेत्र के लिये यूरिया 130 किलो तथा 188 किलो/सिंगल सुपर फास्फेट/हे. दिया जाये।